श्री गंगासागर माहात्म्य ।

राजवैद्य श्रीवामनदासजी कविराज,

हेड आफ़िस नं०—१५२, हरीसन रोड, कलकत्ता ।

दाम —) आना ।

❁ ॐ ❁

गंगासागर माहात्म्यम् ।

सद्य पातक संहन्त्री सद्यो दुःख विनाशिनी ।
सुखदा मोक्षदा गङ्गा गङ्गेव परमागतिः ॥
सर्व्वेषामेव तीर्थानां सागरः प्रवरः स्मृतः ।
गङ्गाब्धि सागरश्चैव तस्मात् कोटि गुणास्मृतः ॥
गंगाब्धि संगमे स्नात्वा दृष्ट्वा माधव संगमम् ।
स याति परमं धामं देवानामपि दुर्लभम् ॥
गंगाद्वारे प्रयागे च गंगासागर संगमे ।
स्नातेव ब्रह्मणो विष्णोः शिवस्य च पुरं व्रजेत् ॥
प्रयागे माघमासेतु यत्फलं प्राप्नु यान्नरः ।
सागर स्नान मात्रेण दिने नैकेन लभ्यते ॥
या गतिर्योग युक्तस्य वाराणस्यां मृतस्य च ।
सा गतिः स्नान मात्रेण गंगासागर संगमे ॥
गंगायाञ्च जले मोक्षो वाराणस्यां जले स्थले ।
जले स्थले चान्तरीक्षे च गंगासागर संगमे ॥

व्याख्या—सब तीर्थोंमें सागरही सबसे उत्तम है, उसके बीचमें गङ्गासागर संगममें स्नान करनेसे कोटिगुण फल कहते हैं। जो मनुष्य ऐसे पुण्यवान् गंगासागर सङ्गममें स्नान तर्पण और माधवजीका दर्शन करते है वह अन्तमें देवताओंके दुर्लभ परमधाम को प्राप्त होते हैं। प्रयाग हरद्वार और गंगासागर संगम इन महातीर्थोंमें स्नान करनेसे मनुष्य अन्तमें इस धाम को त्याग करके ब्रह्मलोक, विष्णुलोक और शिवलोक सर्वत्र सन्मानसे रहने का अधिकार प्राप्त करता है, प्रयागमें नित्य गंगास्नान करनेसे मनुष्य जो महापुण्य लाभ करता है, गंगासागर सङ्गममें एक बार स्नानसे ही वह पुण्य होता है। बहुत कहनेसे क्या—योगिगणोंको जन्मभर कठोर तपस्या करके काशीधाममें देह त्याग करनेसे जो फल होता है, गंगासागर संगममें एकवार स्नान करनेसे ही वह फल मिलता है। गंगा और काशीधाम हमलोगोंके शास्त्रोंमें महातीर्थ कहे जाते हैं। परन्तु गंगासागर इन सब तीर्थोंसे अधिक फल देने वाला है इसका जल, भूमि और आकाश तक भी पुन्यमय और महामोक्ष का प्रदान करनेवाला है। [भविष्यपुराण]

गङ्गासागर तीर्थ वर्णन।

पूर्वकालमें अयोध्या नगरीमें एक महावीर सगर नामक राजा थे उनके दो रानियां थीं, बड़ीका नाम केशिनी छोटी का नाम सुमति था। राजा सगर अपनी दोनों स्त्रियों के साथ

हिमालयके नीचे एक पर्वत पर जहां भृगुमुनि तप करते थे, तपस्या करने लगे। इस प्रकार मुनिकी आराधना करते करते ३०० वर्ष पूरे होजाने पर, सत्तवान भृगुने उनके तपसे प्रसन्न होकर वर मांगनेको कहा—राजाने पुत्रोंके लिये प्रथना की, महर्षिने कहा तुम्हारी एक स्त्रीसे बंश चलानेवाला एक पुत्र और दुसरी से साठ सहस्र सन्तान होंगे, वह वर पाकर केशिनी ने बंशधर पुत्रोंकी कामनाकी और सुमतिने परमोत्साही बलवान साठसहस्र पुत्रोंकी इच्छा की। महाराज सगर मुनिवरको प्रणाम कर रानियोंके सहित अपनी राजधानीको चले गये।

अनन्तर कुछ काल बीतने पर बड़ी रानी केशिनी के एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका असमञ्जस नाम हुआ सुमतिके गर्भ से एक तोम्बी उत्पन्न हुई जिसको भेद कर ६००७० पुत्र पैदा हुये। धात्री उन्हे घीके घडेमें रखकरके बड़ा करने लगी। दीर्घ काल बीतने पर राजा सगरके साठ हजार पुत्र रुप जौवन सम्पन्न हुये। असमञ्जस बडा दुष्ट था वह खेलके समय नगर निवासियोंके लड़कोंको सरयूमें बहाइता था, और उनको डूबते देख हंसता था। पिता सगरने उसको पुरवासियों का अनिष्टकारक जान नगरसे निकाल दिया।

——:o:——

कपिल मुनिके शापसे राजा सगर के साठ हजार पुत्रोंका भस्म होना ।

—·—:०:——

अनन्तर बहुतकाल बीतने पर राजा सगरने एक अश्वमेध यज्ञका अनुष्ठान किया, हिमालय और विन्ध्याचल पर्वतके बीच का स्थान यज्ञ कार्य्यमें श्रेष्ठ है वहीं, राजा सगरका यह अश्व-मेध यज्ञ हुआ था असमंजसके पुत्र अंशुमान राजा सगरके उपदेशसे यज्ञके घोडेको रक्षा करनेके लिये नियुक्त हुये। अनन्तर उस यज्ञके दिन इन्द्रजी राक्षसका वेष धारण कर घोड़ेको हरण कर लेगए। जब राजा सगरको यह बात मालूम हुई तो उन्होंने अपने साठ सहस्र पुत्रोंको घोड़ेको पता लगा-नेकी आज्ञा दी। उनकी आज्ञा पातेही महाबली वज्रके समान देहवाले साठ सहस्र पुत्र प्रफुल्ल मनसें घोडाके खोजमें निकले और अपने हाथोंसे एक एक योजन लम्बी चौड़ी पृथ्वी खोदने लगे। इस समय पृथ्वी वज्रके समान शूल और तीक्ष्ण हल द्वारा भेदी जाकर आर्तनाद करने लगी, इसप्रकार सगरके पुत्रोंने साठ हजार योजन पृथ्वी खोदते २ पाताल जा पंहुचे। उनके उत्पातसे देवता गन्धर्व असुर और पन्नग सब चकित होकर पितामह ब्रह्माजीके पास गये अत्यन्त व्याकुल होके कहने लगे कि हे भगवन्! दुराचारी सगरके पुत्र सब पृथ्वी खोदे डालते हैं, और नाना जलजन्तु सिद्धों तकका प्राणसंहार

करते हैं, जिसीको देखते हैं उसीको अपने यज्ञ का विद्वेषी समझ मार डालते हैं।

देवताओंको इस प्रकार सशंकित और कातर देख भगवान कमलासन ब्रह्माजी देवताओं से बोले हे देवगण! यह वसुंधरा जिन भगवान वासुदेव की स्त्री हैं जो माधव इसके अधिपति हैं वही भगवान कपिलमूर्ति धारण करके दिन रात पृथ्वी को धारण करते हैं उन्हीके क्रोधाग्नि से यह दुष्ट राजपुत्र भस्म हो जायंगे। पृथ्वीका खोदन ही पूर्वकाल में इनके मरनेका निश्चय किया गया है। ब्रह्माजीके यह बचन सुन सब देवता हर्षित हो अपने २ धामको चलेगये। इधर जब कहीं घोड़ेका पता न लगा तब सगरके पुत्रगण मनमारे जी हारे सगरके पास पहुंचे और दुखित चित्तसे बोले। महाराज! हमलोग समस्त पृथ्वीपर घूम आये किन्तु कहीं भी घोडेका पता नहीं लगा। तब राजा सगर ने क्रोधित हो फिर घोड़ेका पता लगाने की आज्ञा दी। महाराज सगरके कहतेही उनके ६० हजार पुत्र पातालको चले और पृथ्वी खोदते खोदते पर्वत समान विरूपाक्ष नामक एक दिग्गज को पृथ्वी धारण किये हुये देखा। यह विरूपाक्ष नामक हाथी कानन पर्वत सहित उस दिशाकी पृथ्वीको अपने ऊपर धारण किये ही रहता है। जब कभी यह हाथी मारे बोझके सिर इधर उधर हिलाता है तो भूकम्प होता है। सगरके पुत्रगण इस दिग्गजकी प्रदक्षिणा और प्रणाम करके रसातल को भेदन पूर्वक गमन करनेलगे

और क्रमसे पूर्व दक्षिण और पश्चिम दिशाको खोदा और प्रति दिशामें एक एक दिग्गजका पृथ्वी को धारण किये हुए देखा किन्तु घोड़ा कहीं न मिला। तब वे क्रोधित हो उत्तर पश्चिम दिशामें जाकर पृथ्वी खोदने लगे, और यहां ये महाबली तीक्ष्ण वेगवालोंने सनातन वासुदेव कपिलदेवजीको बिराजमान देखा और उनके स्थानके थोड़ेही दूर पर घोडेको चरता देख परमानंदित हुए और कपिलदेवजीको ही अपने यज्ञका विघ्नकारी जान क्रोधसे आंख लाल कर वृक्ष शिलादि धारण कर "खड़ाहो खड़ाहो" कहते हुए क्रोधसे दौड़े और "हमारे यज्ञ का घोड़ा तेनेही चुराया है" इत्यादि दुर्बचन कहनेलगे उनके वचन सुन श्रीकपिलजी ने क्रोधसे हुंकार किया उन महात्मा कपिलदेवजीकी हुंकारसे अप्रेमय बलशाली सगर सन्तान गण जलकर राखकी ढेरी होगये।

अंशुमानका यज्ञीय अश्वका पता लगाना।

राजा सगर अपने पुत्रोंको बहुत दिनसे गये हुए जानकर अपने पौत्र अंशुमानको घोड़ेका पता लगानेकी आज्ञा दी।

महात्मा सगरके कहनेपर अंशुमान खड्ग और धनुष धारण कर प्रलय वेगसे चले और मार्गमें जाते २ पृथ्वीके भीतर अपने पितृव्यों का खोदा हुआ एक मार्ग देखा। उसीमें प्रवेश कर जाते २ दिग्गजको पृथ्वी शिरपर धारण किये हुए खड़ा देखा और देखा कि देव दानव राक्षस पिशाच उसकी पूजाकर

रहे हैं। अंशुमान उसको प्रदक्षिण करके उससे कुशल प्रश्न पूछ अपने पितृव्यों सहित उस यज्ञीय अश्वका वृतांत पूछा। अंशुमानका वचन सुन उस महाबुद्धिमान दिग्गजने कहा कि हे अंशुमान तुम कार्य्य सिद्ध कर अश्व सहित शीघ्र लौटोगे। अंशुमान क्रमसे सब दिशाके दिग्गजों को प्रदक्षिणा कर उनसे भी यही वार्ता पूछी और उनने भी उनको "अश्वके साथ शीघ्र लौटेंगे" यही उत्तर दिय, तब अंशुमान वहांसे चलकर जाते २ जहांकि उनके पितृव्य लोग भस्म होगये थे, वहां जा पहुंचे और अपने पितृव्योंकी जली हुई भस्मकी स्तुप देख दुखित हो बिलाप करने लगे। फिर शोकाभिमूख हो दृष्टि संचारण कर देखा कि निकटही अश्व विचरण कर रहा है। तब वह पितृव्यों को जल देने के लिये कृतसंकल्प हुए किन्तु उनको कहीं जलाशय न देखपड़ा फिर इधर उधर दृष्टि संचारण कर अपने पितृव्यों के मामा पक्षिराज गरुड़जीको बैठे देखा। महावली विनता नन्दनजी अंशुमानको दुखी देख बोले कि हे अंशुमान! तुम शोक मत करो यह मृत्यु संसारके सम्मति से हुई हैं महावली तुम्हारे पितृव्य गण श्रीकपिलजीके शापसे भस्म हुए हैं। अतएव उनके सांतिके लिये लौकिक जलसे तर्पण करना ठीक नहीं हिमालयके गङ्गा नाम की एक बड़ी पुत्री हैं तुम उन्हीं गङ्गादेवीके जलसे इनका तर्पण करो यही त्रिलोक पावनी गंगा जी भस्मराशि हुए तुम्हारे पितृव्योंको तारेंगी, हे अंशुमान! अब तुम यज्ञीय अश्वले घरको लौट जाओ और ऐसा करो

जिसमें तुम्हारे पितामहका यज्ञ पूर्ण हो जाय, गरुड़जी का ऐसा वचन सुनकर अंशुमानजी अश्व सहित शीघ्रतासे घरको लौट गए। यज्ञसे दीक्षित राजा सगरजीसे यह वृतांत और गरुड़जी की सब वार्ता कह सुनाई महाराज सगर यह दारुन वृतांत श्रवण करके यथा विधिसे यज्ञ कर्म पूरा किया। अनन्तर यज्ञप्रिय राजा सगर नगरमें प्रवेश कर किस प्रकार गंगाजी पृथ्वीपर आवेंगी इस विषय की चिन्ता करते रहे किन्तु एकाएक कोई उपाय न करसके और तीस हजार वर्ष राज्य करके स्वर्गको चले गये। राजा सगरके बाद अंशुमान राज सिंहासन पर बैठे और बहुत दिनों तक प्रजापालन कर अपने पुत्र दिलीप को राज्य भार सौंप कर हिमालय पाहाड़के शिखर पर तप करने लगे और ३८ हजार वर्ष तप करके स्वर्गको चले गए। महाराज दिलीप अपने पितामहोंका विनाश श्रवण करके दुःखसे पीड़ित रहे परन्तु गंगाजी को पृथ्वी पर लानेका कुछ उपाय निश्चय नहीं करसके। अनन्तर ३३ हजार वर्ष राज्य कर, अपने गुणवान प्रजापालक धार्मिक पुत्र भगीरथ को राज्य-भार सौंप आप अपने कार्य्य फलसे इन्द्रलोक चले गए।

श्रीभगीरथजीके तप से गङ्गाजीका पृथ्वी पर आगमन।

महाराज भगीरथ बहुतकाल धार्मिक राज्यकार्य्य किए। भगीरथजी के कोई सन्तान नहीं था अतएव मंत्रियोंको राज्य

भार सौंप कर आप कर्णनामक स्थानको तप करने चले गये और हजार वर्ष घोर तप किया। तब ब्रह्माजी प्रसन्न हो देवताओं सहित भगीरथजीके पास गए और वर मांगनेके कहा, तब भगीरथजी हाथजोड़ कर गंगाजीको पृथ्वी पर आनेके लिये वर मांगा और पुत्रके लिये प्रार्थना की ब्रह्माजी प्रसन्न हो बोले, हे भगीरथ! गंगाजी मृत्युलोकमे आवैगी, किन्तु उनका वेग धारण करने के लिये शिवजीको प्रसन्न करो। तब भगीरथजी शिवजी का तप करने लगे और १ वर्ष एक अंगूठे पर रह शिवजी का तप करते रहे, अनन्तर सम्बत्के बीत जानेपर सर्व्वलोक वंदित उमापति शिवजी प्रसन्न हो भगीरथजीसे अपने शिरपर गंगाजी को धारण करने को कहा। परम दुर्धरा गंगाजी के आकाशसे गिरते समय मनमें कुपित हो यह विचारा कि मैं शिवजी सहित पातालमें चली जाऊंगी, शिवजी गंगाजीका यह घमण्ड देख अपने जटाको ऐसा फैलाया कि गंगाजी एक वर्ष तक उनके जटामें ही भूली रहगयीं। भगीरथने फिर शिवजी का तप करना आरम्भ किया तब शिवजीने गंगाजी को जटासे निकाल बिंदु सरोवरकी ओर छोड़ दिया। उनके छोड़ने से सात धाराओं की उत्पत्ति हुई ह्लादिनी पावनी और नलिनी यह तीन गंगा जलकी धारा हो उत्तर दिशा की ओर बहीं सूचक्षु सीता और सिंधु नामक तीन धारा पश्चिमको चली अवशिष्ट सातवीं महाराज भगीरथके पीछे २ चली।

उनके गमन करते समय महा कोलाहल उठा और अपनी धाराओं से मत्त कछुए नाके आदि जल जन्तुओं को बहाती हुयी शैल नन्दिनी मन्दाकिनी अपना हाव भाव विलाश दिखाती हुई भगीरथके पीछे पीछे चलने लगी। देवता ऋषि दैत्य दानव राक्षस गन्धर्व किन्नर सब गंगाजी के पीछे पीछे चलने लगे जिस पथसे भगीरथजी जाते थे उसी पथसे गंगाजी भी उनके पीछे पीछे चलने लगीं। अनन्तर त्रिलोक पावनी गंगाजी जन्हु मुनि के यज्ञक्षेत्र में वेग सहित उपस्थित हुई इनके आनेसे ही मुनि का यज्ञस्थल बह गया। यह देख गंगाजी को गर्व हुआ जान जन्हु मुनि अति क्रोधित हुए और क्षणभरमें गंगाजी को पीगये। यह देख देवता गन्धर्व ऋषि-गण विस्मित हुए और जन्हुमुनिकी पूजा स्तुति करने लगे। तब जन्हु मुनिजी ने गंगाजी को अपने जांघ से निकाल दिया तबसे ही त्रिलोक पावनी त्रिभुवन तारिणि गंगाजी का नाम "जान्हवी" हुआ और देवता गन्धर्व, मुनिकी यह कृपा देख अति सन्तुष्ट हो स्तुति किया और कहा कि हे मुनि! आजसे गंगाजी तुम्हारी पुत्री हुई। फिर गंगाजी भगीरथके अनुगामी हो गमन करने लगीं, राह में भगीरथजी लघुशङ्का करने लगे तब तक पद्मासूर राक्षसनें भगीरथका वेश धारण कर गंगाजी को दूसरी ओर लेचला, भगीरथजी लघुशङ्कासे उठ शुद्ध हुए तो गंगाजी को उस राक्षस के अनुगामी देख द्रुतगतिसे दौड़े और उसे विनाश कर गंगाजीको लेचले यह स्थान बिहारसूब

अन्तर्गत भागलपुर के जिले में हैं। गंगाजी उनके पीछे पीछे चलीं महाराज भगीरथजी समुद्रके किनारे पर जहां सगर पुत्रों की भस्म राशी पड़ी थी वहां पहुचे और उनके पश्चात् पश्चात् गंगाजी भी पहुंचीं भगीरथजी अति यत्नसे अपने पूर्व पुरुषों का उद्धार करनेके लिये गंगाजी को वहां ले गये और अपने पूर्व पुरुषोंको भस्म हुआ देख अचेत होगए श्रीगंगाजी का पवित्र जल उस भस्म राशिपर पड़तेही वह सगर के साठ हजार पुत्र देवलोक को चले गए।

जब गंगाजीका जल भस्म राशिपर पड़ा तब लोक पिता ब्रह्माजी आकर भगीरथसे बोले, हे राजर्षे! तुमसे तुम्हारे पूर्वजों का उद्धार होगया अब वह देवताओंकी समान स्वर्ग लोक को चले गये।

हे राजन! जब तक समुद्र में जल रहेगा तब तक सगर सन्तानगण देवताओंके समान स्वर्गमें वास करेंगे।

अबसे यह गंगा तुम्हारी जेष्ठ पुत्री हुई, और तुम्हारे नाम से गंगाजी भागीरथी नाम से विख्यात होंगी अब तुम अपने पूर्व पुरुषोंका तर्पण यहीं करो।

——:o:——

गंगासागर संगम स्नान विधि ।

ॐ विष्णुरोम ततसद् अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रोतपन्नः अमुक नामाहं प्राप्त श्रीगंगा सागर सङ्गमें स्नानमहं करिष्ये ॥

यह संकल्प पढ़ स्नान विधि से स्नान कर फिर हाथ जोड़कर नीचे लिखा मन्त्र पढे ।

त्वं देव सरितांनाथं त्वं देवी सरितां वरे उभयो संगमे स्नात्वा मुचांमि दुरितानिवै,

तर्पण विधि ।

ब्रह्मादयो सुरा सर्व्वे ऋषय. सनकादयः
आगच्छन्तु पितरः सर्व्वे मम तर्पण हेतवे—

ब्रह्मा तृप्यतां, विष्णु तृप्यतां, रुद्रतृप्यतां, इन्द्र तृप्यतां, वरुणः तृप्यतां, सप्तऋषयः तृप्यतां, पितरः तृप्यतां, पिता, पितामह, प्रपितामह तृप्यतां, माता पितामही प्रपितामही तृप्यतां मातामह प्रमातामह, वृद्धप्रम तामह तृप्यतां, मात मही, प्रमातामही, वृद्धप्रमात मही, तृप्यतां—इत्यादि सर्व्वे पितरः तृप्यतां ।

गंगा स्नानके आगे इस मन्त्रको पढ़कर गंगा स्नान करना चाहिये ।

ॐ विष्णु पादाब्ज सम्भूते गंगे त्रिपथ गामिनी
धर्म्म द्रवीति विख्यात पापंमेहर जान्हवी ॥
पपोहं पाप कर्म्माहं पापात्मा पाप सम्भव
त्राहिमां पुण्डिराकाक्ष सर्व्व पाप हरोभव ॥

गंगामाहात्म्यम् ।

——:०:——

॥ वसिष्ठ उवाच ॥

सर्वेषामपि तीर्थानां श्रेष्ठा गंगा धरातले ॥ न तस्या सदृशं किञ्चिद्विद्यते पापनाशनम् ॥ कृते तु सर्व्वतीर्थानि त्रेतायां पुष्करं परम् । द्वापरे तु कुरुक्षेत्र कलौ गंगा विशिष्यते । कलौ तु सर्व्वतीर्थानि स्वं स्वं वीर्यं स्वभावतः । गंगायां प्रतिमुंचति स तु देवी न कुत्रचित् ॥ गंगाभःकणादिध्धस्य वायोः संस्पर्श-नादपि । पापशीला अपि नराः परां गतिमवाप्नुयुः । योसौ सर्व्वगतो विष्णुश्चितस्वरूपी जनार्दनः ॥ सएव द्रवरूपेण गंगाम्भो नात्र संशयः । गंगा पश्यति यः स्तौति स्नाति भक्त्यापिबे जलम् । स स्वर्गं ज्ञानममलं योगं मोक्षं च विन्दति । भवन्ति निर्विषाः सर्पा यथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात् । गंगासन्दर्शनात्तद्वत्सर्व्वपापः प्रमुच्यते । सर्वेन्द्रियाणां चांचल्य व्यसनानि च पातकम् ॥ निर्घृणत्वं च नश्यति गंगादर्शनमात्रतः । परहिंसा च कौटिल्यं परदोषाद्यवेक्षणम् ॥ दाम्भिकत्व नृणां गंगादर्शनादेव नश्यति । यत्फलं जायते पुंसा दर्शने परमात्मनः ॥ तद्भवेदेव गंगायां दर्शनादभक्तिभावतः । नैमिषे च कुरुक्षेत्रे नर्मदायां च

पुस्करे ॥ स्नाना त्सस्पशनात्सेव्य सुफलं लभते नरः। तद्गंगा दर्शनादेव कलौ प्राहुमहर्षयः। योजनाना सहस्रेषु गंगा स्मरति यो नरः ॥ अपि दुष्कृतकर्मा हि लभते परमां गतिम् ॥ मुच्यते सर्बपापोभ्यो बिष्णुलोकं च गच्छति। कीर्तनान्मुच्यते पापंदर्शनान्मंगलं लभेत् ॥ अवगाह्यं तथा पीत्वा पुनात्या सप्तमं कुलम्। गुरुहा गोन्धा स्पृष्टा वा सर्बपातकैः गंगातो यंनरः स्पृष्टा मुच्यते सर्बपातकैः ॥ अनेकजन्मसंभूतं पुंसः पापं प्रणश्यति। स्नानमात्रेण गंगायाःसद्य स्यात्पुण्यभाजनम् ॥ अन्यस्थानकृतं पापं गंगातीरे बिनश्यति। गंगातीरे कृतं पापं गंगास्नानेन नश्यति। सर्बतीर्थेषु यत्पुण्य सर्बेष्टायतनेषु च तत्फलं लभते मर्त्यो गंगास्नानान्न संशयः। युक्तो महापातकसं युक्तो वा सर्बपातकैः ॥ गंगास्नानेन विधिवन्मुच्यते सर्बपातकैः गंगा स्नानात्परं स्नानं न भूत न भविष्यति। बिशेषतः कलियुगे पापं हरति जान्हवी ॥

——:o:——

❀ स्ननान्तर गंगाजी की स्तुति ❀

गंगायै नमः

—:०❀०:—

देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे त्रिभुवन तारिणि तरलतरंगे।
शंकर मौलि निवासिनि बिमले मम मतिरास्तां तवपद कमले।
भागीरथि सुखदायिनि मात तव जलं महिमा निगमख्यात;।
नाहं जाने तव महिमानं त्राहि कृपामयि मामज्ञानम्॥
हरिपद पद्म तरंगिणि गंगे हिम विधु मुक्ता धवल तरंगे।
दूरी कुरुमम दुष्कृति भारं कुरू कृपया भवसागर पारम्॥
तव जलममलं येन निपीतं परमं पदं खलु तेन गृहीतम्।
मातंगंगे त्वयियो भक्तः किलतंद्रष्टुं नकोपि शक्तः।
पतितोद्धारिणि जान्हवि गंगे खण्डित गिरीवर मण्डित भंगे।
भीष्मजननि खलु मुनिवरकन्ये पतितनिवारिणि त्रिभुवनधन्ये॥
कल्पलतामिव फलदां लोके प्रणमति यस्तां नपतति शोके।
पारावार विहारिणि गंगे हिमविधुमुक्ता धवल तरंग॥
नरक निवारिणि जान्हवि गंगे कलुष विनाशिनि महिमोतुंगे।
इन्द्र मुकुटमणि राजित चरणे सुखदे मुभंद सेवक शरणे॥
रोगं शोकं पापं तापं हरमे भगवति कुमति कलापम्।

त्रिभुवन सारे वसुधा हारे त्वमसि गतिर्ममखलू संसारे ।।
अलकानन्दे परमानन्दे कुरुमयि करुणा कातर वन्दे ।
तवतट निकटे यस्य निवासः खलु वैकुण्ठे तस्य निवासः ।।
वरमिहनीरे कमठो मीनः किम्वातीरे सरटः चीणः ।
भो भुवनेश्वरी पुण्ये धण्ये देवी द्रवमयि मुनिवर कन्ये ।।
येषां हृदये गंगा भक्तिः तेषां भवति सदा सुख मुक्तिः ।
गंगास्तवमिदममलं नित्यं पठति नरोयः स जयति सत्यम् ।।

प्रतिवर्ष एकवार केवल माघ महीनेकी संक्रान्ति पर गंगा सागर में यहा मेला होता है, और इस मेले में भारतवर्षके नाना स्थानोंसे वहुसंख्यक यात्रियों का समागम मकर स्नान करनेके वास्ते गंगासागर पर होता है। इस समय अनेक साधु, सन्यासी और संसार-विरागी परिव्राजक इत्यादियों का समावेश होनेके कारण यात्रियोंको साधुदर्शनका अवसर भी प्राप्त होता है। मेला तीन दिन तक रहता है।

सगर संगम तीर्थमें केवल मेलेके ऊपर मनुष्य आते ह और शेष होने पर चले जाते है।

——:o:——

জয় পতাকা जयपताका